शोध मंथन Vol. XVII No.2 July.-Sept. 2026 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.080

राजेश जोशी की कविता में पर्यावरणीय दृष्टि

प्राप्तिः 02.09.2026
स्वीकृतः 20.09.2026

80

आरती सिंह
शोध छात्रा (हिन्दी विभाग)
पंडित ललित मोहन शर्मा, परिसर ऋषिकेश
श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय

अधीर कुमार
प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
पंडित ललित मोहन शर्मा, परिसर ऋषिकेश
श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय

सारांश (Abstract)

राजेश जोशी की पर्यावरणीय दृष्टि मुख्य रूप से प्रकृति और आधुनिक विकास के मध्य संघर्ष पर केन्द्रित है। अपनी कविताओं में कवि ने मानव द्वारा किए जाने वाले प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुन्ध दोहन और इसके सामाजिक व आर्थिक परिणामों पर चिन्ता व्यक्त की है। उन्होंने प्रकृति की उपेक्षा से उत्पन्न त्रासदियों जैसे – भूमिगत जल स्तर का गिरना, भविष्य में खाद्य और जल संकट की आशंकाओं आदि को बताने का प्रयास किया है। साथ ही कविताओं के माध्यम से उन्होंने प्रकृति के संरक्षण के प्रति सचेत करने का सराहनीय प्रयास किया हैं।

राजेश जोशी की कविताएँ प्रकृति और मानवीय जीवन के गहरे अंतर्संबंध को दर्शाती हैं। वे प्रकृति को केवल संसाधन के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसी इकाई के रूप में देखते हैं जो न केवल मानव जीवन को बहुत गहराई से प्रभावित करती है बल्कि उसका अधार हैं।

मुख्य शब्द

प्रकृति, पर्यावरणीय दृष्टि, प्राकृतिक संसाधन, पर्यावरणीय सन्तुलन, संवेदनशीलता, पर्यावरण, मानव जीवन, कविता।

प्रस्तावना

प्रकृति सम्पूर्ण सृष्टि की आधारशिला है। यह प्रत्येक जीव समुदाय को जन्म देने और पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। पृथ्वी पर मौजूद पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, नदियाँ, आकाश, पर्वत, जल, वायु तथा अग्नि ये सभी प्रकृति के ही अंग हैं।

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of Shodhmanthan.*

प्रकृति जगत का वास्तविक अधार है जिससे सृष्टि का निर्माण हुआ । प्रकृति के मुख्य अंगों में भौतिक तत्व, जीवित प्राणी और पाँच महाभूत ये सभी आते हैं। भौतिक तत्व, जीवित, प्राणी और पंच महाभूत तीन अलग–अलग स्तर नहीं, बल्कि एक ही जीवन चक्र के तीन रूप है। पंचमहाभूत स्रोत; भौतिक तत्व संरचना और जीवित प्राणी उस संरचना में चेतन रूप हैं। पंचमहाभूत सृष्टि की मूल शक्ति हैं। सब कुछ इन्हीं से निर्मित है। भौतिक तत्व पंचमहाभूतों का दृश्य रूप है, ये ब्रहमाण्ड के पाँच बुनियादी तत्व हैं जिनसे सजीव और निर्जीव पदार्थ निर्मित हैं। ये भौतिक तत्व सभी जीवों के जीवन का आधार हैं।

पंचमहाभूत, भौतिक तत्व और जीवित प्राणी तीनों मिलकर जीवन का सन्तुलन और पर्यावरणीय समरसता को बनाए रखते हैं। इन्हीं पर सम्पूर्ण जीवन आधारित है। प्रकृति के सौन्दर्य के अन्तर्गत वनों की हरियाली, फूलों के विविध रंग और उनकी सुगन्ध, पर्वतों की ऊँचाई और नदियों का कल–कल स्वर प्रत्येक मानव के जीवन को आनन्दित करता है। प्रकृति इस सम्पूर्ण सृष्टि के प्रत्येक मानव, जीव–जन्तु, कीट–पतंगों सभी के लिए जीवनदायिनी शक्ति है। भोजन, जल, वायु, औषधि, ऊर्जा और आवास ये सभी आवश्यक पदार्थ प्रकृति की ही देन हैं। प्रकृति अपने नियमों से सम्पूर्ण सृष्टि का सन्तुलन बनाए रखती है। इस सृष्टि में ऋतुओं का परिवर्तन, दिन–रात का चक्र और जलवायु ये सब उसकी स्वाभाविक व्यवस्था के अंग हैं। इनसे ही सृष्टि में सन्तुलन बना हुआ है। मानव, प्रकृति से उत्पन्न हुआ है और प्रकृति पर उसकी पूर्ण निर्भरता है। प्राचीन समय में मानव प्रकृति के साथ सामन्जस्यपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा था। मानव प्रकृति को पूज्य मानता था। उस समय मानव प्राकृतिक संसाधनों का औचित्यपूर्ण उपयोग भी करता था, साथ ही उसको पूर्ण सम्मान के साथ पूजता भी था। आज प्रकृति और मानव का सम्बन्ध संतुलित नहीं रह गया हैं। औद्योगिक विकास के मार्ग पर अग्रसर होते हुए प्रकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध उपयोग कर रहा है, वह यह नहीं समझ रहा है कि यदि अपने लाभ के लिए मानव प्राकृतिक संसाधनों का इसी प्रकार अत्यधिक दोहन करता रहा तो आज की पीढ़ी तथा भावी पीढ़ी दोनों के लिए प्राकृतिक संसाधन नहीं बच पाएंगे। सृष्टि में असन्तुलन उत्पन्न होगा। यह असंतुलन इस सृष्टि के सभी सजीव तथा निर्जीव प्राणियों के लिए घातक है। मानव सभ्यता के विकास के लिए प्रकृति के अंतर्गत प्रत्येक मानव को प्राकृतिक संसाधनों का उचित मात्रा में ही उपयोग करना चाहिए, जिससे प्राकृतिक सन्तुलन बना रहे। मानव का अस्तित्व व उसका भविष्य सब प्रकृति पर ही निर्भर है। सृष्टि के अन्तर्गत वृक्षों से निकलने वाली ऑक्सीजन सभी प्राणियों के जीवन को सुरक्षित करती है। प्राकृतिक सौन्दर्य प्रत्येक मानव को मानसिक शान्ति और आनन्द का अनुभव कराता है। सृष्टि में मौजूद औषधीय पौधे मानव को रोगों से मुक्ति दिलाते हैं। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को माँ के रूप में पूजा जाता है। सृष्टि के अन्तर्गत नदियाँ, पर्वत, वृक्ष और पशु–पक्षी धार्मिक आस्था से जुड़े हुए हैं। भारत में कृषि, भोजन व रोजगार का सबसे बड़ा स्रोत है। वन्य सम्पदा भी प्रत्येक मानव के जीवन से जुड़ी अमूल्य निधि है। वनों से प्राप्त लकड़ियाँ, जड़ीबूटियाँ, रबर और अन्य आवश्यक पदार्थ मानव–जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। भारत में प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण प्राकृतिक स्थल अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करते हैं। यदि प्राकृतिक संसाधनो का विवेक पूर्ण उपयोग किया गया तो भावी पीढ़ियाँ भी इन संसाधनों का लाभ प्राप्त कर सकेंगी। भारत में दिन–प्रतिदिन बढ़ते प्रदूषण, वनों की कटाई और जलवायु परिवर्तन

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.080

से प्रकृति असन्तुलित हो रही है, यह मानव के अस्तित्व के लिए खतरे की बात है। इसलिए प्रकृति का संरक्षण सृश्टि पर मानव व जीव–जन्तुओं का भविष्य है।

''प्रकृति पृथ्वी पर समस्त जीवन है, जिसमें भूविज्ञान, जल, जलवायु और अन्य सभी निर्जीव ?kVd “kkfey gS] t ksgekj sxz g d k fuekZk d jrs gSaA''[1]

''प्रकृति के अन्तर्गत पारिस्थितिक तन्त्र और जीव समुदाय पर्यावरण समाहित हैं। इस सामान्य अर्थ में, प्रकृति भौतिक जगत के नियमों, तत्वों और घटनाओं का संजाल है, जिसमें जीवन आकार पाता है, हालांकि मनुष्य प्रकृति का एक हिस्सा है, मानवीय गतिविधियाँ या समग्र रूप से मानव को अक्सर प्रकृति से विपरीत, या पूरी तरह से अलग और यहाँ तक कि श्रेष्ठ भी बताया जाता है।''[2]

प्रकृति और पर्यावरण दोनों ही गहराई से जुड़े हैं, लेकिन इन दोनों का तात्पर्य भिन्न है। प्रकृति समस्त सृष्टि है, जो स्वयं विद्यमान है। प्रकृति जीवनदायिनी है। प्रकृति सभी जीव–जन्तुओं और मानव को आवश्यक पदार्थ प्रदान करती है। प्रकृति शाश्वत है, वह जैसे पहले सभी प्राणियों के जीवन का आधार थी, वैसे ही आज भी है। पर्यावरण प्रकृति का महत्वपूर्ण भाग है। पर्यावरण के अन्तर्गत जीव–जन्तु मानव, पेड़–पौधे तथा वायु, जल, खनिज, मृदा आदि तत्वों का समाहार है। जहाँ प्रकृति सम्पूर्ण प्राकृतिक संसाधनों का भण्डार है, वहीं पर्यावरण जैविक और अजैविक घटकों का समावेश है।

प्रकृति सम्पूर्ण सृष्टि के जीवन की आधारशिला है। भारतीय ज्ञान–परंपरा में प्रकृति को माता के समान माना गया है। जैसे माता अपनी सभी संतानों को एक समान मानते हुए पालन–पोषण करती है उसी प्रकार प्रकृति भी सभी जीव–जन्तुओं और प्रत्येक मानव को पोषित करती है। पर्यावरण प्रकृति के साथ ही सामन्जस्य के साथ सजीव और सन्तुलित प्रक्रिया के रूप में सदा ही विद्यमान है। मानव प्रकृति और पर्यावरण दोनों के अन्तर्गत महत्वपूर्ण भाग है। मानव के द्वारा औद्योगिक विकास के क्रम में शहरीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध दोहन और प्रदूषण, से पर्यावरण का सन्तुलन असन्तुलित हुआ है। पर्यावरणीय दृष्टि प्रत्येक जीव जन्तु और मानव को प्रकृति के साथ, संतुलित होते हुए प्राकृ–तिक संसाधनों के सतत उपयोग की ओर प्रेरित करती हैं। पर्यावरणीय दृष्टि आज के समय में मानव–जीवन के लिए जितनी आवश्यक है, उतनी ही निर्जीव तत्वों के लिए भी महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक संसाधनों का प्रत्येक जीव–जन्तु और मानव जीवन में बहुत महत्व है, परन्तु आज के समय में मानव विकास को ही सर्वोपरि मानकर इन प्राकृतिक संसाधनों का उचित मात्रा में उपयोग नहीं करता बल्कि उनका अत्यधिक दोहन करता है, जिससे पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हो रहा है। जिस कारण असमय वर्षा का होना, जलवायु में विषैली गैसों की मात्रा का बढ़ना, बाढ़ जैसी त्रासदी का होना, भूस्खलन जैसी घटनाएँ पर्यावरणीय सन्तुलन का ही परिणाम है। इन सभी समस्याओं पर पहले के दशक के कवियों की दृष्टि नहीं गयी है। उन्होंने प्रकृति को केवल सौन्दर्य एवं मानवीकरण के रूप में कविता में प्रस्तुत किया, लेकिन जैसे–जैसे समय परिवर्तित हुआ मध्यकाल के कवियों ने प्रकृति को आधार मानते हुए प्रकृति को नारी के समतुल्य कोमल और सौन्दर्य स्वरूप माना। फिर समय थोड़ा और परिवर्तित हुआ तो आज के समय में कवियों ने यह अनुभव किया कि विकास के नाम पर प्रकृति के अन्तर्गत प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध उपयोग हो रहा है, उसके परिणाम–स्वरूप पर्यावरणीय संकट में भी बढ़ोत्तरी हो रही है। पहले के दशक के कवियों की कविताओं में पर्यावरणीय

चेतना से जुड़ी कविताएँ ही मिलती हैं, धीरे–धीरे कवियों की दृष्टि मानवीय क्रियाकलायों की ओर गयी तो उन्होंने कविता के माध्यम से मानव को अपनी जीवनशैली और क्रियाकलापों की ओर ध्यान देने पर जोर दिया। हिन्दी साहित्य में पर्यावरणीय दृष्टि पर विचार करने वाले कवियों में राजेश जोशी प्रमुख हैं। राजेश जोशी हिन्दी साहित्य के अत्यंत सम्मानित कवि, पत्रकार रहे हैं, जिनकी कविताओं में समसामयिक समाज की यथार्थता, मानव जीवन का संघर्ष स्पष्ट दिखाई देता है। साथ ही राजेश जोशी की कविताओं में प्रतिरोध का भाव, जीवन के प्रति सकारात्मकता और पर्यावरण के प्रति सहानुभूति, संवेदनशीलता और जागरूकता का भाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। राजेश जोशी का काव्य संग्रह "एक दिन बालेंगे पेड़" की कुछ महत्वपूर्ण पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

" एक दिन
बोलेंगे पेड़
कि उन्हें काटा न जाए,
कि उन्हें जलाया न जाए,
कि उनके फल और फूल,
उनसे छीनकर बाजारों में न बेचे जाएँ
एक दिन
बोलेंगे पेड़
कि उनके पत्ते
सिर्फ हवा से सरसराने के लिए हैं।
धनुष की डोर में चढ़कर
छूट जाने के लिए नहीं।"[3]

इस काव्य संग्रह में कवि ने पेड़ों को प्रतीक के रूप में उपयोग करके उनके मौन और दर्द को मुखरित किया है। कविता पर्यावरणीय दृष्टि से एक गहरी चेतावनी और संवेदनशीलता को अभिव्यक्त कर रही है। कविता के अन्तर्गत पेड़ों के महत्व और उनके साथ हो रहे अन्याय को सशक्त ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। राजेश जोशी के काव्य संग्रह 'एक दिन बोलेंगे पेड़' में संकलित 'चिड़िया' कविता की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

''उजली धूप में
पानी बरस रहा है
''चिड़िया का ब्याह हो रहा होगा''
कहती है मुनिया।
कहती है मुनिया
चिड़िया का एक पंख
धूप है

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.080

एक पंख
पानी।
चोंच में
जो दाना है
वह दाना
दाना पानी भी है
और आकाश भी"[4]

इनकी 'चिड़िया' शीर्षक कविता में पर्यावरणीय दृष्टि स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। यहाँ 'चिड़िया' प्रकृति का सुन्दर रूप और पर्यावरणीय सन्तुलन का प्रतीक बनकर उपस्थित है। कवि कविता के माध्यम से प्रकृति में चिड़िया के अस्तित्व और अपने घोंसले के साथ पर्यावरण के सौन्दर्य और जीवन के प्रति सकारात्मकता को अभिव्यक्त कर रहे हैं।

आज के समय में बढ़ते औद्योगीकरण और भूमण्डलीकरण ने जिस प्रकार शहरों में उपभोक्तावादी विचारधारा में रह रहे युवा वर्ग की जीवनशैली को प्रभावित किया है, उसे कवि ने अपनी कविता में व्यक्त किया है। इस उपभोक्तावादी जीवन में मानव इस प्रकार लिप्त हो गया है कि उसे अपने जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है, यह समझ नहीं रह गयी है। राजेश जोशी की कविता 'वहीं' की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

"एक दिन हम अपने घर का नम्बर भूल जाएँगे
और अपना घर नहीं भूल पाएंगे
और तभी दूर से सीटी मारता एक पुलिस वाला
आकर पूछेगा क्यों बैठे हो यहाँ
हम कहेंगे हम अपना घर नहीं ढूंढ़ पा रहे है
वह हमारी बात का यकीन नहीं करेगा
वह, थाने ले जाने के बारे में धमकायेगा
और कहते—कहते अचानक फफक कर रो पड़ेगा
कहेगा मै भी कई रातों से अपना घर
ढूंढ रहा हूँ"[5]

राजेश जोशी की कविता 'किस्सा तालाब का' में कवि ने पेय जल की समस्या को बहुत ही मार्मिक ढंग से दर्शाने का उत्तम प्रयास किया है।

''वह फकत पानी नहीं था
कि जिसे पीकर किसी को कोस लेता
उससे मुंह धोना सम्भव न था न कुल्ला करना
वह खरीदा हुआ था और महँगा भी
उसका हर घूँ.ट हलक से उतरते हुए

एक सिक्के की तरह बजता था।"[6]

आज के समय में पेड़ को केवल एक वस्तु न माना जाए बल्कि पेड़ों की भी संवेदनशीलता को समझा जाए। मानव जब पेड़ों के सपनों अर्थात उनके अस्तित्व को काटता है, तो पर्यावरणीय सन्तुलन प्रभावित होता है। कवि इस कविता के माध्यम से पेड़ों और प्रकृति के सपनों की रक्षा की ओर संकेत कर रहा है क्योंकि यदि मानव जीवन और प्रकृति में पेड़ ही नहीं रहेंगे तो मानव के आज और भविष्य दोनों पर ही इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

राजेश जोशी की कविता 'इससे पहले' की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

'पेड़ के सपने में जो एक दरवाजा था
मैं उसे खोलकर बाहर आया
बाहर दूर तक फैला एक नीला आसमान था
उसमें पेड़ के सपने चिड़ियों की तरह उड़ रहे थे
बाहर जो नाँव बँधी थी उसे पेड़ों ने अपने
सपनों को काटकर बनाया था
जड़ों की ओर जाती जल नाड़ियों की थरथराहट में नाव बार—बार हिलती थी
पेड़ के सपने में जो एक खिड़की थी
मैं उससे अन्दर झाँक कर पेड़ की उम्र पढ़ता था।[7]

आज के समय में मानव संस्कृति के विकास, उसके भोगवादी स्वरूप और उससे उत्पन्न हुई पर्यावरणीय समस्या को गहराई से इस कविता में व्यक्त किया गया है। राजेश जोशी की कविता 'शासक होने की इच्छा' की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

वहाँ एक पेड़ था
उस पर कुछ परिन्दे रहते थे
पेड़ उनकी आदत बन चुका था
'फिर एक दिन
परिन्दे जब आसमान नाप कर लौटे
तो पेड़ वहाँ नहीं था
फिर एक दिन
परिन्दों को एक दरवाजा दिखा
परिन्दे उस दरवाजे से आने जाने लगे
फिर एक दिन परिन्दों को एक मेज दिखी
परिन्दे उस मेज पर बैठ कर सुस्ताने लगे
फिर परिन्दों को एक दिन एक कुर्सी दिखी
परिन्दे कुर्सी पर बैठे

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.080

तो उन्हें तरह–तरह के दिवास्वप्न आने लगे
और एक दिन उनमें
शासक होने की इच्छा
जगने लगी !'[8]

राजेश जोशी की कविता 'पेड़ की तरह' में कवि की पर्यावरणीय दृष्टि स्पष्ट देखी जा सकती है। कवि इस कविता द्वारा प्रकृति के साथ सामन्जस्य और विनम्र होने की ओर ध्यान देने, का संकेत कर रहे हैं। यदि मानव पेड़ की तरह ऊँचा और चौड़ा बनने का प्रयास करता है, तो वह स्वार्थी और प्रकृति के विरुद्ध हो जाता है। 'जंगल नाराज है' पंक्ति से तात्पर्य यह है कि दिन–प्रतिदिन पर्यावरण असन्तुलित होता जा रहा है। राजेश जोशी की कविता 'पेड़ की तरह' की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

'पेड़ की तरह सोचता हूँ
पेड़–भर
ऊंचा उठकर ।
पेड़–भर सोचता हूँ
पेड़–भर
चौड़ा होकर।
इसी से
जंगल नाराज है।''[9]

राजेश जोशी की कविता 'बसन्त 1985' मानव में पर्यावरणीय दृष्टि यह है कि आधुनिक शहरी जीवन में प्रकृति से मानव का सम्बन्ध टूटता जा रहा है। आज के समय में बसन्त जैसे ऋतुराज के आ जाने पर भी हरियाली का अभाव है। कवि इस कविता के माध्यम से ये कहना चाहते हैं कि यदि प्रत्येक मानव प्रकृति के इस परिवर्तन को समझने का प्रयास करे और प्रकृति का सतत उपयोग करे जिससे प्रकृति की जीवनदायिनी उपयोगिता हमेशा बनी रहे। राजेश जोशी की 'बसन्त 1985' कविता की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

'इतना थका और लज्जित
किसी ने नहीं देखा होगा
बसन्त को
जरा–सी आहट पर खड़े हो जाते हैं कान
और तपने लगती हैं लवें
कि कहीं कोई पूछ न बैठे
क्यों आए इधर
इतना सहमा और शंकित

किसी ने नहीं देखा होगा कभी
बसन्त को
कोई वृक्ष नहीं जहाँ
एक हरी कोंपल की तरह फूट सके वह
कोई वृक्ष नहीं जिसे फूलों से लादकर
विस्मित कर डाले वह सबको !!
और कोई नहीं जो
आँख भर देखे उसे
और आश्चर्य से भर जाए !
हो क्या गया है इस शहर को !
रेलवे प्लेटफॉर्म पर
बेचैनी से चहलकदमी करता सोचता है वह
कि किसी भी दिशा को जाने वाली
आए कोई भी गाड़ी
चढ़कर चला जाएगा वह
किसी और शहर को
इस तरह आते और इस तरह लौटते
किसी ने नहीं देखा होगा
इससे पहले कभी
बसन्त को'[10]

राजेश जोशी ने कविता 'कर्बला' के माध्यम से यह पर्यावरणीय दृष्टि बताने का प्रयास किया है कि पानी केवल पदार्थ नहीं है, बल्कि जीवन, सहअस्तित्व और कृतज्ञता की भावना का प्रतीक है। कवि मानव को इस कविता द्वारा यह बता रहे हैं कि हम जब भी जल पिएँ तो प्रकृति और जल–स्रोतों के प्रति आभार, आदर और संवेदनशीलता को महसूस करें। कविता 'कर्बला' की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

'पानी पियो तो याद करो प्यास इमाम हुसैन की!
पानी पियो तो शुक्रिया अदा करो बादलों का
नदियों, तालाबों और समुन्दरों का
शुक्रिया अदा करो समुन्दरों का
समुद्रों का पानी पीने के काम न आए तो भी!
पानी पियो तो शुक्रिया अदा करो कुम्हारों का
जिन्होंने बनाए पृथ्वी की तरह गोल मटके
और बहुत सुन्दर सुराहियों जिनकी गरदनें,

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.080

सुन्दर स्त्रियों की तरह पतली और लम्बी हैं!
पानी पियो तो सोचो
काटी तो नहीं तुमने दूसरों की नहरें
किसी की प्यास के रास्ते में तुम यजीद तो नहीं?
पानी पियो तो याद करो उस शख्स को
तपते रास्तों में जिसने दिया
गुड़ और पानी
जिसने रास्तों में बिठाई ठण्डे पानी की सबीलें
उसका शुक्रिया अदा करो!'[11]

राजेश जोशी की कविता 'बौर आ गया है' में पर्यावरणीय दृष्टि स्पष्ट दिखाई देती है। कवि इस कविता के माध्यम से प्रकृति के प्रति गहरा प्रेम, संवेदना और पर्यावरणीय सन्तुलन को बनाए रखने के लिए प्रत्येक मानव को सजग रहने का संदेश दे रहे हैं। कवि कविता के माध्यम से यह बताने का प्रयास कर रहे हैं कि प्रकृति में कुछ भी स्थिर रहने वाला नहीं है। प्रकृति में निरंतर परिवर्तन हो रहा है यही परिवर्तन प्रकृति का वास्तविक स्वरूप है।

कविता 'बौर आ गया है' की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

'आम पर बौर आ गया है
मादक गन्ध के आस आस पास बहुत बारीक
फतिंगे उड़ रहे हैं
और एक–एक कर दिन–भर पेड़ से
पत्ता झर रहा है
पूर्वज कवि कह गया है
किताबी होगा वह कवि जो कहेगा
कि पत्ता झर रहा है
कहो कि पेड़ कुछ कर रहा है
कभी पूरा पतझर नहीं होता
आम पर
इसी तरह पत्ता–पत्ता झरता है
इस तरह पेड़ दिन–भर कुछ–न–कुछ करता है
नए पत्ते जगह ले लेते हैं
पुराने पत्तों की
चिन्ता ही नहीं करनी पड़ती
पेड़ को कपड़े लत्तों की!'[12]

राजेश जोशी की कविता 'उसकी परछाई' में पर्यावरणीय दृष्टि स्पष्ट दिखाई देती है।

इस प्रकार राजेश जोशी की कविताओं में पर्यावरणीय दृष्टि आज के समय में प्रासंगिक है क्योंकि उनकी रचनाएँ केवल–पेड़–पौधों या प्राकृतिक सौन्दर्य तक ही सीमित नहीं हैं, उनकी कविताएँ मानव, समाज और पर्यावरण में निरन्तर हो रहे परिवर्तन को गम्भीरता से अभिव्यक्त करती हैं। राजेश जोशी प्रकृति को केवल सौन्दर्य का संसाधन नहीं मानते, बल्कि प्रकृति को जीवन का आधार मानते हैं।

'कविता या किसी भी रूप में सामने आने वाली रचनात्मक अभिव्यक्ति अपने समय और समाज के प्रति व्यक्त की गयी एक खास तरह की प्रतिक्रिया होती है। इस प्रतिक्रिया में समय–समाज का और उसके बीच रचनाकार के आत्म का, जो बोध व्यक्त होता है उसे ही हम रचना की संवेदना कहते हैं।'[13]

उनकी कविताओं में इस चेतावनी को स्पष्ट देखा जा सकता है कि मानव स्वार्थ के वशीभूत होने के कारण प्रकृति से दूर होता जा रहा है। राजेश जोशी कविता के माध्यम से यह बता रहे हैं कि आज के समय में किस तरह आधुनिकता, विकास के नाम पर पेड़ों को काटा जा रहा है, नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, वायु की स्वच्छता पर भी इसका प्रभाव पड़ रहा है, मिट्टी की उर्वरता पर भी स्पष्ट प्रभाव पड़ रहा है। राजेश जोशी की कविताएँ प्रत्येक मानव को प्रकृति और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील दृष्टि और आत्म चिन्तन करने के लिए प्रेरित करती हैं।

सन्दर्भ

1. आई सी एम एम – प्रकृति की व्याख्या https://nature- icmm.com
2. प्रकृति–विकिपीडिया Wikipedia https://en-wikipidia-org
3. जोशी, राजेश 'एक दिन बोलेंगे पेड़', संस्करण 1980, पृ0सं0–**96**।
4. जोशी, राजेश 'एक दिन बोलेंगे पेड़', संकलित कविता (चिड़िया), संस्करण–1980
5. जोशी, राजेश 'वही (कविता)' पृ0सं0–**20**।
6. जोशी, राजेश 'प्रतिनिधि कविताएँ', कविता संग्रह (चाँद की वर्तनी), संस्करण–2015, पृ0सं0–**26**।
7. जोषी, राजेश '75 कविताएँ राजेश जोशी', प्रथम संस्करण – 2023, पृ0सं0–**15**।
8. जोशी, राजेश '75 कविताएँ राजेश जोशी', प्रथम संस्करण – 2023, पृ0सं0–**15–16**।
9. जोशी, राजेश '75 कविताएँ राजेश जोशी', प्रथम संस्करण – 2023, पृ0सं0–**64**।
10. जोशी, राजेश '75 कविताएँ राजेश जोशी', प्रथम संस्करण – 2023, पृ0सं0–**68**।
11. जोशी, राजेश '75 कविताएँ राजेश जोशी', प्रथम संस्करण – 2023, पृ0सं0–**28**।
12. जोशी, राजेश '75 कविताएँ राजेश जोशी', प्रथम संस्करण – 2023, पृ0सं0–**107**।
13. तिवारी, डा० विजय बाला छायावादोत्तर काव्य, पृ0सं0–**76**।